इस्तेमाल करने की कोशिश लोग करते हैं । लेकिन ज्यादा कारण यही होता है कि जब वे खेतों में बाहर निकल जाते हैं और लोगों को खा जाते हैं, जैसा मैंने कहा कि 170 के करीब आदमी मारे गए शेरों की वजह से, जिन्हें कि शेर खा गए । इसलिए हो सकता है कि उनको जहर भी दिया गया हो और उनका शिकार भी किया गया हो । जहां तक जू में रखने का सवाल है वहां पर तो हैं ही लेकिन यदि कहीं नहीं हैं और जहां पर कि जू में उनको रख सकते हैं वहां पर जू में रखने की कोशिश करेंगे ।

*265. [*The questioner (Shri Sharad Yadav) was absent. For answer,* vide *col.* 31 infra].

Watering of plants under social forestry schemes

*266. SHRI AJIT P. K. JOGI: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) whether Government are aware that in certain parts of the country wherein the plantation is done under the social forestry schemes, the survival rate of the plants is extremely low because there is absolutely no provision in such schemes for watering these plants at least during the summer months, *i.e.*, the period when most of the plants die out; and

(b) if so, whether Government propose to make suitable provision for watering/irrigation in the social forestry schemes to avoid colossal loss of money and effort in this direction?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI Z. R. ANSARI) : (a) Government are aware that survival rate of seedlings in social forestry plantations in certain parts of the country on degraded sites is low the low survival rate is not any due to insufficient moisture but poor physical structure of the soil, low fertility of the degraded land, lack of protection against grazing by cattle and insect/pest damage. There is no specific provision exlusively for watering seedlings in the social forestry scheme;

(b) Government does not propose to take any exclusive provision for watering in the social forestry schemes as it is not practical and lack of watering is not the only reason for low survival rate where such rate is low.

श्री अजीत जोगी : : मान्यवर, पेड़ लगाना बहुत आसान है, किन्तु उसकी रक्षा करना, उसको बड़ा करना कठिन काम है। सामाजिक वानिकी योजना के अंतर्गत जो पेड़ लगाए जा रहे हैं ऐसे क्षेत्रों में, जो उनके परिणाम हम लोगों ने देखें हैं, उससे यह स्पष्ट होता है कि इन पेड़ों की जो सरवाइवल रेट है उसकी संख्या बहुत ही कम है। मंत्री जी ने अपने उत्तर में कहा है कि केवल गरमी के दिनों में सिंचाई का पानी न मिलने के कारण ही यह ऐसा नहीं है, दूसरे अन्य कारण भी हैं । अभी पिछले दिनों में मध्यप्रदेश के पश्चिमी जिलों में सामाजिक वानिकी के कार्यों को देख रहा था और ऐसा प्रतीत होता है कि यदि बहुत अच्छी जमीन में लगाए गए . . .

MR. CHAIRMAN: Mr. Jogi, everytime you are delivering a lecture and don't put a question. Please write your questions hereafter and put them

श्री अजीत जोगी : Yes, Sir, मैं यह जानना चाहता हूं कि जो पेड़ लगाए गए है, उन पर सिंचाई की व्यवस्था इसलिए नहीं की जा सकी है क्योंकि प्रति हेक्टेयर जो राशि सामाजिक वानिकी कार्यों के लिए स्वीकृति की गयी है, वह इतनी नहीं है कि उससे सिंचाई की व्यवस्था हो सकती हो । कम से कम ऐसे क्षेत्रों में जहां अच्छी भूमि पर और जहां पर सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, सरकार अपने मापदण्डों में संशोधन करेगी और कम से कम क्षेत्रों में सिंचाई के लिए राशि व्यय करने की अनुमति देगी, जिससे इन पेड़ों की सुरक्षा हो सके और वे बच सकें ?

श्री जेड० आर० अन्सारी : सभापति जी, मैंने जो बात कही है, उससे कहीं यह नहीं साबित होता है कि मैंने कोई मना ही की है कि एरीगेट नहीं की जा सकती, एरीगेशन फेसलिटीज नहीं दी जा सकती जहां पर मुमकिन हो और फिर रिसोर्सेज अवलेबल हो, वहां पर जरूर की जा सकती है । लेकिन जो बात देखने की है वह यह है कि यह लो सरवाइवल रेट, इसका एक कारण नहीं है, अनेक कारण हैं । उनमें से एक कारण मोइस्चर का भी है, लेकिन दूसरे जो मेजर कारण है, वह ग्रेजिंग, फेन्सिंग का ना होना, अच्छी सोयल का ना होना, यह दूसरे भी कारण हैं इस बात को इवेल्यूट करेंगे कि इनमें से किस कारण की वजह से सरवाइवल रेट बहुत ज्यादा लो है । इस पर कोई बकायदा स्टडी नहीं है । यह बात माननीय सदस्य ने सही कही कि जो कोस्ट होती है एरीगेट करने की, वह कोस्ट इतनी एग्जार्बिटेण्ट है कि इस बात को इवेल्यूएट किए बगैर कि जो कास्ट हमको एरीगेट करने में व्यय करनी पड़ेगी वह ज्यादा वायबल है या दूसरी चीजों में, जिनकी वजह से सरवाइवल रेट कम होता है, उससे है, उसकी तरफ ज्यादा तवज्जुह देनी चाहिए ।

श्री अजीत जोगी : मान्यवर, मैं यह जानना चाहूंगा कि सामाजिक वानिकी के जो कार्य अभी तक हुए हैं उनमें से क्या किन्हीं क्षेत्रों में, किन्हीं प्रांतों में, किन्हीं जिलों में यह सर्वेक्षण किया गया है कि जो पेड़ लगाए गए थे, उनमें से वास्तव में कितने पेड़, दो वर्ष के बाद, तीन वर्ष के बाद या पांच वर्ष के बाद या एक निश्चित अवधि के बाद अभी तक हैं । यह कोई ऐसे सर्वेक्षण किसी क्षेत्र में किए गए है और सरवाइवल रेट के आंकड़े क्या उपलब्ध हैं ? यह बताने की कृपा करेंगे ।

श्री जेड० आर० अन्सारी : सभापति जी, जो सोशल फारेस्टरी के प्रोग्राम में एफोरेस्टेशन होती है, उसकी बकायदा मोनेटरिंग होती है और यह जो हमारे अफीसर हैं, ग्रोन-स्पोट जाते हैं और जाकर देखते हैं। कोई उसका साइंटिफिक तरीका नहीं है । लेकिन जो भी वहां पर जाकर के मोनेटरिंग की है बीस पाइंट प्रोग्राम के तहत्...

MR. CHAIRMAN: He has not asked about monitoring. He wants to know whether you have conducted any survey about the rate of survival of the plantings.

SHRI Z. R. ANSARI: Sir, no such survey has been conducted. Actually, the results of the monitoring have shown that in different States, there are certain percentages of survival which have been identified in different years; in 1982-83; 1983-84; 1984-85 and so on. The results of the monitoring are there.

MR. CHAIRMAN : Can you give the rate of survival of the plantings? This is what he asked.

SHRI Z. R. ANSARI: Yes, Sir. The rate of survival is different in different States. For instance, in Andhra Pradesh, in 1982-83, it was 65 per cent; in 1983-84, it was 80-90 per cent and in 1984-85, it was 65—99 per cent. In all the States, monitoring has been done.

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मान्यवर, देश में वन का क्षेत्रफल बहुत कम है। सरकार एक बहुत ऊंचे उद्देश्य से वनों के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिए ही वेस्ट लैंड में जो ग्राम समाज की या दूसरी जमीने हैं उनमें वन लगाने का प्रोग्राम बनाए हुए है । माननीय मंत्री जी ने पिछले प्रश्न के उत्तर में यह कहा है कि पिछले दो वर्षों में क्रमशः 15 लाख और 17 लाख हैक्टेयर भूमि में वन लगाये गये हैं । मान्यवर, अभी उत्तर दिया गया है कि पानी भी नहीं दिया जाता पशु तो चरते ही हैं, कीट भी उनका नुकसान करते है, जमीन भी खराब है तो क्या कोई वृक्ष बगैर पानी के और बगैर एहतियात के बढ़ सकते है उनकी रक्षा हो सकती है ? अगर रक्षा नहीं हो सकती तो जो आपने वृक्ष लगाये हैं क्या ये वेस्टेज नहीं हैं और इस वेस्टेज को बचाने के लिए आप कोई स्पेसिफिक डेफिनेट प्रोग्राम बनायेंगे जिससे कि इस मिशन को जो किसी ऊंचे उद्देश्य से

किया गया है उसमें वन सुरक्षित रह सकें, बढ़ सकें तो इस प्रकार का कोई प्रोग्राम है और क्या आप इसका सर्वे करायेंगे ?

श्री जेड० आर० अन्सारी : सभापति जी, माननीय सदस्य को मेरे जवाब से कुछ गलतफहमी हुई है । सारे के सारे कारण पूरे देशभर में जहां पर प्लांटेशन के प्रोग्राम चल रहे हैं एक साथ मौजूद हैं । मैंने जिस कांटक्स्ट में इस बात को कहा वह यह कहा था कि अनेक कारण हैं, नो सर्वाइवल रेट, जमीन अच्छी नहीं है, पानी में माइस्चर की कमी, कटल ग्रेजिंग, उनका प्रोटेक्शन न होना, इन बहुत से कारणों की वजह से हो सकता है । यह बात स्टेबिलाइजड करना कि माइश्चर की वजह से है या प्लांटेशन का रेट कितना लो हुआ, यह कारण ज्यादा है या दूसरे कारण ज्यादा है, इन सब कारणों से यह यह बात कही थी । जहां तक इस बात का सवाल है कि इस सारी चीजों के बावजूद जैसा मैंने आप को बताया कि सर्वाइवल रेट 65 परसेंट से लेकर...

श्री वीरेन्द्र बर्मा : केवल उत्तर प्रदेश का ही बता दें इन वैस्टलैंड ।

श्री जेड० आर० अन्सारी : मैं उसी का अभी बता रहा हूं ।

MR. CHAIRMAN : What is the rate of survival in U.P.?

SHRI VIRENDRA VERMA: In regard to wasteland.

SHRI Z. R. ANSARI : I am giving the survival rate in the case of the plantings which have been done under the twenty-point programmme. In 1982-83...

MR. CHAIRMAN: Please give the figures for recent years?

SHRI Z. R. ANSARI : In 1982-83, it was 80 per cent.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO : Very good.

SHRI Z. R. ANSARI: In 1983-84...

श्री वीरेन्द्र बर्मा : केवल वेस्टलैंड का पूछ रहा हूं बता दें । वैस्टलैंड का प्रश्न है । वहां जमीन खराब है, पानी की कमी है...

MR. CHAIRMAN: He is giving the figures under the twenty-point programme.

श्री वीरेन्द्र बर्मा : यह क्वेश्चन 20 प्वाइंट प्रोग्राम का नहीं है । सोशल फारेस्ट्री का है ।

SHRI Z. R. ANSARI : Sir, social forestry is a part of the twenty-point programme. It is one of the points in the twenty-point programme. Afforestation is being done, planting work is being done under the twenty-point programme.

MR. CHAIRMAN: What is the latest figure in respect of U.P.?

SHRI Z. R. ANSARI : This is what I am giving. In 1984-85, it was 80—95 per cent.

SHRI VITHALRAO MAHDHAVRAO JADHAV: Sir, there are three reason for the non-survival of plants planted by the social forestry department. The reasons are: (1) not getting enough water, (2) animal grazing and (3) mismanagement. In Maharashtra there has been drought for the last three years and this has been responsible for the non-survival of plants planted uder social forestry department. I would, therefore, like to know from the hon. Minister whether he can give the figures for the last two years, how many plants have been planted under social forestry in Maharashtra and how many of them have survived.

SHRI Z. R. ANSARI: I do not have figures for Maharashtra?

SHRI Z. R. ANSARI: I do not have the Maharashtra figures. Let me see.

MR. CHAIRMAN: That is all right. If you do not have the figures, you ask for notice. (*Interruptions*). I do not want him to guess.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: If he has got the figures, let him give.

SHRI Z. R. ANSARI: Yes, Maharashtra, in 1982-83 it was 75 per cent, in 1983-84 it was 90 to 100 per cent.

SHRI MURASOLI MARAN: Is it one hundred per cent? This is anti-social forestry, not social forestry.

SHRI Z. R. ANSRAI: In 1984-85 it was 20 to 95 per cent. The position is like this. Hon. Members are very much excited to hear the figure of 100 per cent. These figures vary from 20 per cent to 95 per cent. In certain patches the survival rate is only 20 per cent.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: Mostly.

SHRI Z. R. ANSARI: In certain areas where these factors like animal grazing, bad management are not there and where there is better moisture, the survival rate is up to 95 per cent. Therefore, this variation is there.

श्री घनश्याम सिंह : : सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो पिक्चर बताई है और सामाजिक वानिकी के बारे में जो कुछ कहा है, अगर वह वास्तव में सही है तो सवाल पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है । लेकिन माननीय मंत्री जी से मैं यह जानना चाहता हूं कि विभाग की ओर से जो आंकड़े उन्हें उपलब्ध कराये गये हैं, क्या उन आंकड़ों की जांच करने के लिए वे कोई कमेटी बनाएंगे जिससे मालूम पड़े कि इन आंकड़ों में कितनी सत्यता है ? मैं समझता हूं कि ये आंकड़े सत्य नहीं हैं, यह मेरी अपनी जानकारी है ।

श्री जेड० आर० अन्सारी : सभापति जी, जहां तक कमेटी बनाने का सवाल है, कुछ दिनों के बाद श्री घनश्याम सिंह जी खुद कहेंगे कि इस कमेटी के कार्यों की जांच करने के लिए दूसरी कमेटी बनाई जाय । मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह हमारा मानिटरिंग फूलप्रूफ नहीं है, कोई साइंटिफिक तरीका नहीं है । सही बात यह है कि प्लानटेशन के बाद हमारे आफिसर्स जाते हैं और कुछ एरियाज का देखकर उसका सर्वेक्षण करते हैं, उसको गिनते हैं, उसका एसैसमेंट करते हैं । जैसा मैंने कहा, यह एसैसमेंट साइंटिफिक नहीं है । इसमें गलती के इमकानात हो सकते हैं । फर्ज कीजिए कि प्लानटेशन के बाद दो तीन महीनों में सर्वेक्षण हुआ और उस वक्त सर्वाइवल का परसेन्टेज एक है, लेकिन अगर छः महीने या साल भर के बाद हो तो उसमें कुछ कमी आ सकती है । इस तरह से इसमें गलती के इमकानात हो सकते हैं, इससे इंकार नहीं किया जा सकता है । इस बारे में कोई साइंटिफिक तरीका इवेल्यूशन का अभी तक अख्तियार नहीं हो पाया है ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि कम पानी में लगने वाले वृक्षों को क्या आइडेन्टीफाई किया गया है ? अगर किया गया हैं तो वे कौन से वृक्ष हैं ?

श्री जेड० आर० अन्सारी : सभापति जी, यह तो...

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Development of National Parks in Maharashtra

*263. SHRI NARESH C. PUGLIA: Will the Minister of TOURISM be pleased to stete::

(a) the particulars of the master plan for the development of National Parks in Maharashtra with a view to attracting tourists; and

(b) what is the estimated cost of development of these tourist spots and by when the work is likely to commence?

THE MINISTER OF TOURISM: (MUFTI MOHD. SAYEED): (a) The Ministry of Tourism has not prepared any master plan for the development of National Parks in Maharashtra.

(b) Does not arise.